Kunal Bhange, one of the FTII -ACTING aspirant Reflected in his email:

worth sharing with you

एक पागल, बेघर इंसान...

फ़िल्म cinema paradiso में एक ऐसे किरदार को गढ़ा गया है, जो शायद बहोत समय से उस शहर का रहना वाला है, और cinema paradiso हॉल के सामने जो चौक है उस चौक को ही पागल आदमी के अपनी सनक के साथ अपना ख़ुद का घर मानता है, वही रहता है, वही सोता है।

इसी तरीके से मानव निर्माण हुआ है, की जब कोई मनुष्य अपनी चार दिवारी, अपने छोटे या बड़े, कच्चे-पक्के जैसे भी मकान में रहने लगता है, उसके साथ उसका जुड़ाव ना सिर्फ़ उसको धूप से छाव देने आर बारिश में छत देने का होता है, बल्कि उस मकान, उस मिट्टी, उस भूमि की हिफाज़त की जिम्मेदारी भी उसकी होती है, हम अपने अनुसार सवेरा होते घर के किवाड़ खोलते है, रात में सोने के वक्त हम उस किवाड़ को बंद करते है, उसको सवारते है, मर्रमत करते है, साफ-सुथरा रखते है।
कोई हमारे घर के बारे में कुछ गलत बोल दे, तो हमे बुरा लगने लगता है।
हम संवेदनशील होने लगते है। हमारी संवेदना, हमारा स्नेह, मोह उस चार दिवारी से जुड़ जाता है।

यही स्नेह, संवेदना, और मोह और अपनी धरती से जुड़ाव को दर्शाने के लिए इस किरदार का उपयोग इस फ़िल्म में किया गया है। पूरी कहानी के बीच बीच में ये किरदार इस चौराहे के साथ जुड़े इसके निजी स्नेह को दर्शाने लोगो से कहता है, की "अब समय हो गया, इसे बंद करना चाहिए,"
वो लोगो से कहता है, की इसका मज़ाक मत बनाओ, इसके बारे में कुछ गलत मत कहो.. और बार बार वो यह विश्वास दिलाना चाहता है कि "यह चौक उसका है", इसपर उसका हक़ है और वह उस चौक का निष्ठा से पालन कर रहा है।

दरअसल, नायक Salvatore के जीवन की कहानी के आखिर वाले दृश्यों से इस किरदार की बातों को जोड़कर देखा जाए तो, alfredo के गुज़र जाने पर जब salvatore जब 30 साल बाद वापस अपने शहर आता है, और देखता है, की सब कुछ बदल चुका है, पुराने मकान अब नए हो गए है, बड़ी-बड़ी इमारते तन चुकी है, शहर आधुनिक हो चुका है, वो सिनेमा हॉल भी अब पुराना जर्जर, खंडहर हो चुका है, चौक भी हट चुका है, और अब बहोत सारी गाड़िया पार्क की जा रही है, सब कुछ बदल चुका है, पर वह पागल अभी भी उसी जगह को अपना घर मानता है, अपना चौक मानता है। उस भूमि के साथ उसका जुड़ाव अभी भी वैसा ही है जैसा 30 साल पहले उस चौक के होने पर हुआ करता था।

असल मे, salvatore के उस शहर के साथ लगाव को, पागल आदमी के परिपेक्ष्य से दर्शाने की कोशिश की गई है, इन सबके साथ यह विचार जुड़ा हुआ है कि salvatore का पूरा बचपन उस शहर में बिता, उसका घर, उसकी विधवा माँ और छोटी बहन वहां है, शहर के लोगो से उसको प्यार भी बहोत मिला, पर alfredo से वचनबद्ध होने के कारण उसे उस शहर से दूर कही रहना पड़ा।
लेकिन आज भी उसका प्यार उसका जुड़ाव उस शहर के साथ उतना ही है, जैसा उस पागल आदमी का है, पागलपन ही सही, लेकिन एक जीवित व्यक्ति मात्र होना उसके, उसकी अंतरात्मा की भावना, अंतरमन का जुड़ाव होना, उसकी सनक और पागलपन मार्मिक रूप से इस पूरी कहानी को खूबसूरत बनाता है, और salvatore के साथ बीते हुए को, उसकी भावना को जैक देने का काम करता है।

Cinema paradiso फ़िल्म से इन हिस्सो को हटा देने पर, अपनी भूमि के साथ लगाव, स्नेह दिखाने का जो विचार सामान्य से और ज्यादा गहरा और खूबसूरत बनाने के लिए रचा गया है, वह ख़त्म होता दिखेगा, क्योंकि उस पागल आदमी के परिपेक्ष्य से ही salvatore के अंतरमन के विचार को उकेरा गया है, इसके अलावा salvatore को दूसरे शहर मे जाने के बाद सिर्फ उसके बीते हुए का स्मरण ही दर्शाया गया है, जबकि उसका स्नेह, लगाव और अपनापन को दर्शाने के लिए पागल आदमी के किरदार का उपयोग किया गया है।